Q→ समाजशास्त्र की परिभाषा दीजिए। समाजशास्त्र की विषय-वस्तु का उल्लेख करें।
(Define sociology. Discuss the subject matter of sociology.)

Ans- Sociology लैटिन भाषा के Socio तथा ग्रीक भाषा के Logus शब्दों से मिलकर बना है। Socio शब्द का अर्थ है समाज तथा Logus शब्द का अर्थ विज्ञान। जितना अपना समाज प्राचीन है उतना समाजशास्त्र प्राचीन है। किन्तु बात ऐसी नहीं है। समाजशास्त्र सभी समाज विज्ञान में नवीन है। इसका जन्मदाता आगस्ट कांटे (Auguste Comte 1798-1857) को माना जाता है।

समाजशास्त्र का विकास भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में हुआ है अतः समाजशास्त्री इसकी परिभाषा व विषय वस्तु के विषय में एकमत नहीं है। भिन्न भिन्न समाजशास्त्रियों ने भिन्न-भिन्न दृष्टिकोणों से समाजशास्त्र को परिभाषित किया है। यही कारण है कि आज तक समाजशास्त्र की कोई एक सर्वमान्य परिभाषा नहीं बन पाई है। जिन दृष्टिकोणों को अपनाकर समाजशास्त्र को परिभाषित किया गया निम्नलिखित है।

गिन्सबर्ग (Ginsberg) "समाजशास्त्र मानवीय अन्तः क्रियाओं, पारस्परिक सम्बन्धों तथा इनकी दशाओं और परिणामों का अध्ययन है।" (Sociology is the study of human inter-actions and inter-relations the condition and consequences.)

2

Page No.:
Date: / /

वार्ड (Ward) "समाजशास्त्र समाज का विज्ञान है।" (Sociology is the ~~knowledge of~~ human science of society.)

गीडिंग्स (Giddings) "समाजशास्त्र पूर्ण रूप से किया गया समाज का क्रमबद्ध वर्णन और व्याख्या है।" (Sociology is the systematic description and explanation of society viewed as a whole.)

मैकाइवर (MacIver) "समाजशास्त्र की विषय-वस्तु सामाजिक सम्बन्ध है।"

दुर्खीम (Durkheim) के अनुसार "समाजशास्त्र सामूहिक प्रतिनिधित्व का विज्ञान है।"

मैक्स वेबर (Max weber) के अनुसार "समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो कि सामाजिक कार्य का आलोचनात्मक बोध कराने का प्रयास करता है।"

किम्बल यंग (Kimbal young) के अनुसार "समाजशास्त्र मानव समूहों के व्यवहार का अध्ययन करता है।"

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि समाजशास्त्र हमारे समाज में होने वाले सभी प्रकार की आपस में मनुष्य के द्वारा जो भी क्रिया-कलाप किए जाते हैं उसी के अध्ययन को समाजशास्त्र कहा जा सकता है और समाज में आपसी व्यवहार को किये को समाजशास्त्र की संज्ञा दिया जाता है।

इस तरह से इसके विषय वस्तु निम्नलिखित होते हैं।

समाजशास्त्र की विषय-वस्तु (Subject matter of sociology) जहाँ तक समाजशास्त्र की विषय वस्तु का प्रश्न है, समाजशास्त्री इस विषय पर भी एक मत नहीं है। वास्तव में समाज इतना व्यापक विषय है, कि इसके विभिन्न पहलुओं पर अन्य सामाजिक विद्वानों द्वारा भी अध्ययन किया जाता है। ऐसी स्थिति में यह निश्चित करना कि समाजशास्त्र समाज के सभी पहलुओं अथवा किसी एक पहलू पर अध्ययन करेगा निःसंदेह यह कठिन कार्य है। जब समाजशास्त्र की परिभाषा पर सभी समाजशास्त्री एकमत नहीं हो पाए हैं तब इसकी विषय-वस्तु पर समाजशास्त्रियों के बीच मतभेद होना स्वाभाविक है। समाजशास्त्र की विषय वस्तु की अनिश्चितता पर अपने विचार प्रकट करते हुए प्रोफेसर बी० एफ० कालवर्टन ने कहा है कि "क्योंकि समाजशास्त्र एक लचीला विज्ञान है, इसलिए यह निश्चित करना बिल्कुल कठिन है कि इसकी सीमा कहाँ से प्रारंभ होती है तथा कहाँ समाप्त होती है, कहाँ सामाजिक मनोविज्ञान समाजशास्त्र हो जाता है तथा कहाँ अर्थशास्त्र हो जाता है तथा कहाँ अर्थशास्त्र का सिद्धान्त समाजशास्त्र की धारणा बन जाता है। अथवा जैविकीय सिद्धान्त समाजशास्त्रीय सिद्धान्त बन जाता है। Since sociology is so elastic a science it is difficult to determine just where its boundaries begin and end: where sociology becomes social phychology or social psychology become sociology, or where economic

theory become sociological doctrine or biological theory become sociological theory."

अतः समाजशास्त्र की विषय वस्तु पर सभी समाजशास्त्री एकमत नहीं है। इस संबंध में प्रमुख विद्वानों ने अपने विचार इस प्रकार दिये हैं :-

(1) दुर्खीम (Durkheim) के अनुसार समाजशास्त्र की विषय वस्तु को तीन भागों में बाँटा जा सकता है।

(i) सामाजिक स्वरूपशास्त्र (Social Morphology) :- इसके अन्दर मानव जीवन के भौगोलिक आधार और सामाजिक संगठन के स्वरूपों का अध्ययन किया जाता है।

(ii) सामाजिक शरीर शास्त्र (Social Physiology) :- इसको अनेक शाखाओं में विभाजित कर दिया गया है जैसे धर्म का समाजशास्त्र, कानून का समाजशास्त्र, भाषा का समाजशास्त्र, परिवार का समाजशास्त्र आदि।

(iii) सामान्य समाजशास्त्र (General Sociology) इसके अन्दर उन सामान्य सामाजिक नियमों के अध्ययन का प्रयत्न होता है जो समाज के दार्शनिक पक्ष जैसे परम्परायें रीति-रिवाज एवं जीवन संबंधी आदर्शों से संबंधित है।

(2) सोरोकिन के विचार (According to Sorokin) :- समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं की सभी श्रेणियों की सामान्य विशेषताओं उनके पारस्परिक संबंधों एवं सह संबंधों का विज्ञान रहा है और रहेगा भी अन्यथा इस विषय का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि मुख्य रूप से समाजशास्त्र का विषय —
(i) समूह तथा समूह का व्यवहार
(ii) संस्कृति
(iii) सामाजिक संगठन एवं संरचना
(iv) सामाजिक परिवर्तन तथा व्यक्ति और समाज है।

(3) रयूटर तथा हार्ट (Reuter and Hart) के समाजशास्त्र की विषय वस्तु
(i) सामाजिक विरासत
(ii) व्यक्तित्व तथा इसका विकास और
(iii) सामाजिक प्रक्रियाएँ बताई हैं।

(4) मोरवानी (Morwani) के अनुसार समाजशास्त्र की विषय वस्तु निम्नलिखित है।

(i) समाजशास्त्र उन नियमों की खोज करता है, जिनके कारण सामाजिक जीवन के आधारभूत तत्वों में सामंजस्य स्थापित होता है।
(ii) समाजशास्त्र सामाजिक संस्थाओं के विकास, प्रगति कार्यों तथा अन्तः संबंधों की व्याख्या करता है।
(iii) समाजशास्त्र उन तत्वों की ओर संकेत करता है जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा निर्धारित करते हैं।
(iv) समाजशास्त्र सामाजिक व्याधियों और अव्यवस्था को दूर करने के लिए व्यवहारिक उपाय प्रस्तुत करता है।

(v) समाजशास्त्र उन सामाजिक शक्तियों तथा कारकों के अध्ययन पर जोर देता है जो व्यक्ति और समूह को प्रभावित करने में सहायक होते हैं।

इस प्रकार समाजशास्त्र की विषय वस्तु पर सभी समाजशास्त्रियों ने विस्तृत रूप से प्रकाश डाला है। कुछ विद्वान समाजशास्त्र को सामाजिक व्यवहारों एवम् संबंधों का अध्ययन स्वीकार नहीं करते हैं, वरन् सामाजिक स्वरूपों के अध्ययन का विज्ञान मानते हैं। अतः समाजशास्त्र सामाजिक संबंधों तथा व्यवहारों का अध्ययन मुख्य वैज्ञानिक एवं विशेषज्ञ के रूप में अध्ययन करता है।

DR Vijyant Kumar Mishra
Assi Prof (Guest Faculty)
Dept of Sociology
23/06/2021